Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI)
Volume 12, Issue 8, July 2021: 14332 - 14336

"Farmers' Problems and Solutions: A critical Study"

Prof. Dr. Kishore B. Kude
(Assistant Professor)
Phule-Ambedkar College of Social Work, Gadchiroli
E-mail: gojirikude@gmail.com

Abstract

India is an agricultural country. Being an agricultural country India has such a distinct identity. The environment over here is favorable for all the products. Agriculture is the main occupation of the Indian people. Earlier people used to say proudly "I do cultivate, and I am a farmer!" But today the situation has changed. The situation turned against the farmers. Due to all these factors like climatical, social, family, political, in every way, the farmer has become helpless today. Earlier India was called "golden bird". I think the meaning of saying "golden bird" is that the country was an agricultural country and the farmers were also happy, reconciled, used to live life happily. But we see in the present situation that the farmers in the society and in the country have been completely ruined. The life of the farmer is living his life in difficulties, hardships and under mental pressure. They have many reasons. In the present study "problems and solutions of the farmers" I would like to give the in depth analysis of different reasons.

In this study "Causes and Remedies of Farmer's Depression: A critical Study" a question arises Why do farmers of Vidarbha finally commit suicide? Why can't they live a normal life? Or they are born in debt and spend their rest of life in debt and die and die? After all why like that! We have tried to study and collected the information through the analysis of questions from some books, from social observation and through some discussion medium. And what measures farmers can take on those problems? those suggestions are given at the end of our study. The selection made in the study is our prior imagination, which is the selection made after collecting the facts. That preconceived notion turns out to be maximal. So today our country and the whole world have made great progress about new technologies, that's how we hear and our country also says proudly. Still why are our farmers are suffering so much today? A big question arise in the mind.

प्रस्तावना –

आज विदर्भ हो या महाराष्ट्र हो या पुरे देश के किसान समस्या से बड़े ग्रस्त है। एक साल सें हम देख रहे है की, किसानों का आंदोलन चल रहा है। इस आंदोलन का हल ना खुद किसान ढुंढ पा रही है ना सरकार ढुंढ पा रही है। आखीर कसुर किसका है ! यह मुझे नही पता, पर किसान परेशान है। पहेले बड़े गर्व से कहते थे की, मैं किसान हुँ और उनका बेटा भी कहता था की, मेरा बाप किसान है। आज बाप कहता है की, बेटा चार किताबें पढ ले, नही पढेगा तो किसान बनेगा। तुझे किसान नही बनना, सरकारी नौकर बनना है। नौकरी याने दुसरों की तरफ काम करना। किसान याने खुद मालीक रहना। लेकीन यह सोच बदल अब गयी। जैसे हमारे पुराने जमाने की फिल्म थी **''मदर इंडीया''** इस फिल्म में पचास - साठ साल पहले चित्रीत किया गया था की, किसानों की हालत के बारें में और कौन कौन से तत्व जबाबदायी होते है ये भी बताया गया था। फिर भी किसान खुद को बदल न पाएं और जो किसान बदलना चाहतें है उन्हें इस व्यवस्था नें बदलने नही दिया । और कुछ बदले हुए लगते है उनकी संख्या कितनी है? हमारे लाल बहादुर शास्त्रीजी नें **'जय जवान, जय किसान'** यह नारा दिया था। लेकीन आज के राजनिती कर्ता सिर्फ अपने

मतलब के लिए किसान आंदोलन में शामील होते है। जब इन किसानों का सहारा लेके बडे होते है। तब इस किसानों को ही भुल जातें है।

संदर्भ साहित्य विवेचन –

दिवाकर बोकरे : ''शेतकऱ्यांची आत्महत्या ... थांबवायच्या कशा? '' (2008) -

इस अध्ययन में विदर्भ में बिते तीस-चालीस साल से किसानों की होने वाली आत्महत्या, उनके कारण, उस पर राजकर्ता ने कौन कौनसे उपाय किए है और सबसे ज्यादा भारतवर्ष में और महाराष्ट्र में 'सफेद सोना' कहे जाने वाला जिल्हा, कपास का जिल्हा यवतमाल विदर्भ में सबसे ज्यादा आत्महत्या हो रही है। उसके लिए कंपनियाँ कैसे जबाबदार होते है। वेतन आयोग को किसानों के हित, विरोध कार्य कैसे करे, आंदोलन जनक्रांती इसके बारे में भी विवेचन किया है। और किसानों को किन आव्हानों का सामना करना पडता है। इस बारें में भी विस्तृत से विवेचन किया गया है।

डॉ. नंदा पांगुळ-बारहाते, ''आत्महत्या वैदर्भीय बळीराजाच्या'' (2009) –

किसानों की आत्महत्या इस विषय पर ''आत्महत्या वैदर्भीय बळीराजाच्या'' इस शिर्षक पर डॉ. पांगुळ इन्होंने किसानों के समस्याओं पर प्रकाश डाला है। और वैदर्भिय किसानों के आत्महत्या के कारण और निर्माण होने वाली परिस्थितीयां सर्वसामान्य लोगों तक पहुंचाना कैसे जरुरी है, आत्महत्या रोकने के लिए सुझाव और नए पिढी के लिए किसानों के लिए बदलते तंत्रज्ञान के बारे में इस अध्ययन में उजागर किया है।

डॉ. गोपीचंद ना. निंबार्ते, ''भारतीय ग्रामीण समाज आणि समस्या'' (2015) –

इस अध्ययन में भारतीय किसानों की आबादी, बदलता हवामान, बदलती ग्रामीण संस्कृती, ग्रामसभा के माध्यम सें किसानों के बारे मे विकासात्मक चर्चा कैसे कि जाती है - इसका महत्व इस किताब में दिया है। गांव में किसान मंडल का महत्व, युवकों का उत्तरदायीत्व, पुरक व्यवसाय का महत्व, योजनाओं की जानकारी इस विषय पर महत्वपूर्ण अध्ययन किया गया है।

डॉ. वर्षा वैद्य, प्रा. सुनिल घुगल, ''भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : समस्या आणि उपाय'' –

भारतीय किसानों की समस्या के दर्शन, उच्च विद्याविभुषित किसानों के प्रश्न के संदर्भ में उत्तरदायित्व, किसानों की खस्ताहाल होने के कारण, अभीतक किये जाने वाले उपाय, सावकारों की तरफ से होने वाले अत्याचार, भ्रष्टाचार की वजह से किसानों के होने वाले हाल, राजकीय नेताओं का किसान के प्रती दुर्व व्यवहार इस बारें में बड़े विस्तृत से इसमे दिया गया है।

अध्ययन के उद्देश –

१. खेती के बदलते स्वरुप का अध्ययन करना ।
२. किसानों की समस्याओं का अध्ययन करना ।
३. उपाययोजना के बारे मे अध्ययन करना ।

उपकल्पना –

१. खेती करने का स्वरुप बदल रहा है।
२. किसानों की समस्या बड़ी जटील होती जा रही है।
३. कुछ उपाययोजना शासकीय स्थर पर किए जा रहे है।

किसानो के समस्यों के कारण -

१. **नैसर्गिक परिस्थितीया :** आज नैसर्गिक परिस्थितीया भी किसानों के प्रती रुठ गयी है। बारीश में धुप निकलती है और धुप में बारीश आती है। भारतवर्ष में हर क्षेत्र में नैसर्गिक परिस्थितीयों को देखते हुए फसले ली जाते है। जिस एरीया में जैसी नैसर्गिक परिस्थीती हो उस तरह से उत्पादन खेतीबाड़ी होती है। आज परिस्थितीयां ऐसी हो गयी है की नैसर्गिक परिस्थितीयां बदल चुकी है। जीस एरिया में सोयाबीन, कपास की फसले ली जाती हैं और जब फसल काटनें की बारी आती है। तब बारीश होती है। और जिस वक्त बारीश की आवश्यकता होती है। तब बारीश गायब हो जाती है। इन परिस्थितीयों के वजह से किसान बेहाल परेशान है।

२. **किसानों की उदासिनता :** आज की पिढ़ी को खेती करने में या खेती में काम करने में उसे शरम आती है। बाजु के गाँव मे से सायकल से शहर में आके दुकान में काम करेगा पर उसके खुद के या दुसरे के खेती में काम नही करेगा। खेती या उससे निगडीत काम न करने की उनकी सोंच बन गयी है। मेरी थोडीसी जो जमीन है में उसमें कुछ नया प्रयास कर सकता हुँ क्या, या फिर नयी तकनीक का उपयोग करके आधुनिक खेती कर सकता हुँ क्या इसके बारें में भी सोचना बंद कर दीया है।

३. **जमिन कि हिस्सेदारी :** पहले हर एक आदमी के पास बीस-बीस, पचास-पचास एकड़ जमिन रहती थी। वो आज दो-दो, चार-चार एकड़ पर आ गयी है। जो उनकी मानसीकता थी, जो हम मालगुजार है, पाटील है यह मानसीकता हैं कुछ किसान बदल नही पाए। और यह दो-चार एकड़ में नया कुछ करने का सोचतें नही।

४. **राजकारण :** हमारा देश एक लोकतंत्र देश है। यह हमारे लिए बडे गर्व की बात है। लोकशाही यानी सत्ता का विकेंद्रीकरण। विकेंद्रीकरण हमारे ग्रामपंचायत से होता है। यानी हमारे देश के नियोजन में ग्राम पंचायत, पंचायत समिती और जिल्हा परीषद इनका बड़ा महत्व है। इसलिए की इस क्षेत्र का प्रतिनिधीत्व करके विकास करें। किसानों का विकास करें। मुलभूत जरुरतों का विकास करें। किंतु हमारे मतलबी, बडे राजनितीयों ने हमारे ग्रामीण किसानों को ही साल भर के लिए राजनितीयों में उलजा दिया है। किसानों का खेतीयों का व्यवसाय छोडकर इनके बॅनर और झेंडे पकडने के लिए और राजकर्ता के सभाओं की शोभा बडाने के लिए किसानों का इस्तिमाल कर रहें हे। और किसानों को दोर चार पॉलिटीकल गुंटों में बांट दिया है। और गाँव गाँव में दंगे फसाद चालु कर दिए। घर घर में झगडें लगा दिए। पहले भी राजनिती थी, तब सिर्फ चुनाव के वक्त राजनिती तत्व और मुल्यों के साथ होती थी। पर आज किसानों को आपस में मनभेद करके राजनिती होती हुई दिखाई देती है।

५. **रासायनिक दवाइयां और बिजों के बढते दाम :** आज की खेती करने की परिस्थितीयां बदल गयी है। पहले किसानों के आँगन में दस-बारा पचास-सौ पशुधन दिखाई देते थे। उसकी वजह सें किसान आत्मनिर्भर होता था। क्युंकी उनसे मिलने वाला खत वो खेती के उपयोग में लाकर एक अच्छी फसल उगाता था। परंतु आज के किसानों के आँगन में दो गाय भी नही दिखाई देती। उससे मिलने वाला जो गोबर है वह खेती के लिए बड़ा उपयुक्त और जमीन को पोषक रखता था पर आज जमीन और खेती को सेंद्रीय खत नही मिल पाता। आदमी के लोभ के कारण जिस फसल को चार महिने लगते है उसे दो महिने में निकालनें के लिए रासायनिक दवाइयां और खतों का अधिकतम वापर किया जाता है। और यह वातावरण के हिसाब से जरुरी भी हो गया है। परंतु यह कुछ राजनिती और व्यापारीयों कें नितीयों के कारण खतों के तथा दवाइयों के दाम बढ़ गये है। 2000 से लेकर 50000 हजार प्रती लिटर के रासायनिक दवाइयां बाजार में बिक रही है। किसानों का ज्यादातर हिस्सा इन दवाइयों और खतों को खरीदने में चला जाता है।

६. **फसवी कंपनीयां :** कंपनीया कम दिनों में कम उत्पादन में ज्यादा पैसा कमाने के लालच में गरीब किसानों की लुटमार करते है। नकली दवाइयां और बीज बनाके बाजार में बेचते है। और वह बीज उगते नही या उस दवाई का असर कुछ होता नही। किसान के पैसे भी डुब जाते है और फसल भी नही निकलती। उसकी वजह से किसान कभी चार पैसे कमा नही पाता।

७. **भ्रष्टाचार :** भ्रष्टाचार की चोट किसी को ज्यादा लगती होगी तो सबसे ज्यादा किसानों को। क्यूंकी किसान के खेती में उपयोग होने वाली हर चीज बाजार में डुप्लीकेट मिलती है। किसान कम पडा लिखा होता है, शांत

स्वभाव का होता है और वह सब के उपर विश्वास रखने वाला इंसान होता है। सोसायटी का कर्ज निकालने के लिए गया तो कार्यालय के कर्मचारी और अधिकारी भी उससे पैसे ऐटते है। जहाँ जहाँ पर जाएंगे वहाँ वहाँ पर किसानों की लूट होती है। इसलिए किसान कभी चार पैसे जमा करके नही रख सकता ।

८. **दो पिढ़ीयों में विचारों का अंतर :** भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। आज भी बड़े पयमानें पर पारंपारीक खेती कि जाती है। आज भारत में भी औद्योगीकरण का भी विकास हुआ है। किंतु आज अगर पड़ा लिखा हुआ लड़का कुछ नयी प्रकार की खेती करना चाहता है, खेती में कुछ लगाना चाहता है, या कुछ नयी तकनीक का उपयोग करना चाहता है। तो उसका विरोध पुराने जमाने के लोग विरोध दर्शाते है। क्युंकी हम आज तक हमारे पिता दादाजी के विरोध में जाकर खेती नही कि दुसरी फसल नही लगाई। क्युंकी हम कोई आपदी नही लेना चाहतें। क्युंकी हमारा सालभर का उदरनिर्वाह इसी बात पर है। कही हम डुब गए तो यह विचार सें किसानों की तरक्की हो नयी पाती।

९. **शासकीय योजनों के प्रती अज्ञान :** भारत सरकार या किसी भी राज्य सरकार ने किसानों के लिए बहुत सारी योजनाऐं निर्माण किए है। परंतु उसकी जानकारी तांत्रिक अभाव के कारण किसानों तक पहुँच नही पाती। उसकी वजह से योजनाओं का लाभ किसान ले नही पातें।

१०. **फसल को उचित दाम न मिलना :** कपास वाला किसान रहें या फिर सोयाबिन, धान या अन्य किसी भी प्रकार के उत्पादन लेने वाले किसानों को उसका मेहनताना उसने किया हुआ खर्चा जो उसकी लागत है, तो वो निकलती नहीं। क्युंकी पहलेही छोटी-छोटी खेती वाले किसान है और पारंपारीक खेती करने वाले किसान है। दुसरी ओर बाजार मे उत्पादन का मुल्य बहुत कम है। जब इनके हाथ से फसल बीक जाती है। तब बड़े व्यापारी मालामाल हो जाते है। सिर्फ चिंता विरोधी पार्टीयों को होती है, सत्ता पार्टी को नही। यानी कहने का मतलब है की, किसानों के प्रती किसानों को जिवीत रखने के लिए, किसानों की उन्नती करने के लिए सिर्फ दिखावा करते है। दिल से अहसास किसी को नही होता। यह सब बातें किसानों के परीवार को ही पता होती है की, जिते कैसे और मरते कैसे है।

११. **भौतिक सुविधाओं का उपयोग :** आज गाँव में भी मोबाईल, डिश टि.व्ही., बाईक, इंटरनेट की सुविधा तो पहुँच गयी। परंतु इनके खर्चे बढ़ गए। यह सुविधा जरुरी भी है, परंतु आर्थिक उत्पादन नही बड़ा। और किसान ऐसे मानसिकता मे है की यह सुविधा बंद भी नही कर सकते और उनका उपयोग कीया तो खर्चा भी नही उठा सकते।

किसानों की समस्याओं के लिए उपाययोजना -

१. किसान को पारंपारिक खेती से निकल के व्यापारी दृष्टिकोन अपनाना जरुरी है। बाकी उद्योग में जैसा व्यवसाय दृष्टिकोन से व्यवसाय होता है। उसी प्रकार से किसान की भी सोच होना जरुरी है।
२. छोटे किसानों को नयी तकनिक का उपयोग करके आर्थिक फायदा देने वाली फसल करनी चाहिए।
३. गाँव के जो मजदुर है उनको शहर में जाकर काम करने से बेहतर खेती में काम करना कैसे फायदेमंद होता है, उसके बारे में जागरुक करना चाहिए।
४. किसानों को खेती के पुरक व्यवसाय जैसे की मच्छीपालन, वराहपालन, बकरीपालन, फुलों की खेती जहाँ जहाँ जैसी नैसर्गिक परिस्थितीयां है उस प्रकार से हवामान पुरक खेती तथा पुरक व्यवसाय करना चाहिए।
५. शासकिय योजनाओं की जानकारी ग्रामसभा के माध्यम सें ग्रामपंचायत संबंधीत अधिकारी पढें लिखे लोग, समाचारपत्र या संबंधीत कार्यालय में जाकर उन योजनाओं के बारें में जानकारी रखना और लाभ लेना जरुरी है।
६. रासायनिक दवाईयाँ, बीज कंपनियाँ उसके लेबल उनके बारे में चर्चा और जागरुक रहना जरुरी है।
७. किसानों को उत्पादन लागत के आधार पर बाजार मूल्य दिया जाना चाहिए।
८. न्यूनतम गारंटीकृत मूल्य प्रदान किया जाना चाहिए।
९. गारंटी और बीमा के साथ उन्नत बी-बीज उपलब्ध कराए जाएं।

१०. फसल बीमा के तरीकों को लागू किया जाना चाहिए।
११. दबाव समूह में किसान संगठनों को पूरी भूमिका निभानी चाहिए।
१२. औद्योगिक कृषि बाजारों की स्थापना कर प्रसंस्करण उद्योगों का निर्माण किया जाना चाहिए।
१३. कृषि सब्सिडी कम नहीं होनी चाहिए।
१४. बाढ़ नियंत्रण के लिए सिंचाई परियोजनाएं स्थापित की जानी चाहिए।

निष्कर्ष -

१. अज्ञान किसानों के समस्याओं का महत्वपुर्ण कारण है।
२. कौटूंबिक मतभेद भी किसान के समस्या का कारण है।
३. राजकारण को अपना काम छोड के अतिमहत्व देना यह भी किसानों के पिछलेपण का महत्वपुर्ण कारण है।
४. परिस्थितीयों का ज्ञान न होना और उसका विपरीत परिणाम किसानों के खेती पर होता है।
५. निकली हुई फसल को रखने के लिए गाँव में गोदामों की कमी दिखाई देती है ।
६. किसान की फसलों को उचित दाम न मिलना यह उसके आर्थिक स्थिती गंभीर है यह दर्शाती है।

सुचना -

१. शासन को किसानों की योजनाओं के बारे में जनजागृती करना जरुरी है।
२. भारत के किसानों का महत्व कितना महत्वपुर्ण होता है इसके बारे में मत प्रदर्शीत करना।
३. खेती के प्रती आदरभाव रखना।
४. पशुधन को बढावा देना।
५. हर गाँव में किसान मंडल का गठन करके उसमें चर्चा आयोजित करना।

संदर्भ:-

१. डॉ. वर्षा वैद्य, प्रा. सुनिल घुगल, ‘‘भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या: समस्या आणि उपाय’’, संजय ठाकरे सर साहित्य केंद्र, नागपूर, प्रथम आवृत्ती
२. डॉ. गोपीचंद ना. निंबार्ते, ‘‘भारतीय ग्रामीण समाज आणि समस्या’’, श्री.मंगेष प्रकाशन, नागपूर, प्रथम आवृत्ती-2015
३. डॉ. नंदा पांगुळ-बारहाते, ‘‘आत्महत्या वैदर्भीय बळीराजाच्या’’, आर.बी. प्रकाशन, नागपूर
४. दिवाकर बोकरे, ‘‘शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या .... थांबवायच्या कशा! ’’, डायमंड पब्लिकेशन, नागपूर
५. शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या स्वरूप आणि वास्तव, चंद्रकांत वानखेडे
६. शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या आणि दिर्घकालीन उपाययोजना, म.वा.ओंकार
७. वृत्तपत्रीय कात्रणे- दै. तरुणभारत, दे. देशोन्नती, दै. सकाळ, दै. लोकमत माहीती स्त्रोत १ शेतकऱ्यांच्या

***